ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-4* May- 2020
Innovation The Research Concept

विवेकानन्द जी के विचारों का आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में महत्व

Importance of Vivekananda's Ideas in Education in Today's Perspective

Paper Submission: 19/05/2020, Date of Acceptance: 28/05/2020, Date of Publication: 30/05/2020

संदीप कुमार तिवारी
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
मालवांचल विश्वविद्यालय,
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

अश्विनी कुमार गुप्ता
शोध निर्देशक
शिक्षा शास्त्र विभाग,
मालवांचल विश्वविद्यालय,
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है। अतः आज शिक्षा के उद्देश्य लोकतंत्रीय व वैज्ञानिक नागरिकता का विकास को निर्धारित किया गया है, आज शिक्षा का उद्देश्य बालकों को इस योग्य बनाना है कि वे शारीरिक, चारित्रिक एवं कलात्मक सौन्दर्य को प्राप्त कर सकें, अपना जीवन सुखमय बना सकें। मानव जीवन इतना जटिल है कि प्रारम्भ में उसकी एक ही समस्या थी कि जीवन की रक्षा कैसे की जाये। कालान्तर में मनुष्य का जीवन जटिल होता चला गया और उसके सामने अनेक समस्यायें आने लगी और इन समस्याओं के समाधान के लिये शिक्षा का सहारा लिया गया, वर्तमान भारतीयों को शिक्षा की तरफ आकर्षित करने के लिये ऐसा वातावरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता है जो व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव डालने में सफल हो सके।

The academic ideas of Vivekananda have been studied in the presented research paper. Therefore, today the objective of education has been set for the development of democratic and scientific citizenship, today the aim of education is to make the children capable so that they can achieve physical, character and artistic beauty, make their life happy. Human life is so complex that initially he had only one problem, how to protect life. In the course of time, the life of man became complicated and many problems started coming in front of him and education was resorted to to solve these problems, to attract the current Indians towards education, there is a need to present such an environment which is positive on the person. Managed to make an impact.

मुख्य शब्द विवेकानन्द जी के विचारों का आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में महत्व
Importance of Vivekananda's Ideas in Education in Today's Perspective.

प्रस्तावना

वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा का प्रत्येक स्तर पर रोगग्रस्त दिखाई दे रहा है इस स्थिति को देखते हुये भी लोग इस पर ध्यान नहीं दे पा रहे है, जबकि इस बिन्दु पर गहन विचार–विमर्श की आवश्यकता है, जिससे शिक्षा के प्रत्येक स्तर का समाधान किया जा सके। प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा सुधार की आवश्यकता है, शैक्षिक जगत के लोगों को ध्यान देने की आवश्यकता है।

समस्या कथन

विवेकानन्द जी के विचारों का आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में महत्व का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी प्रकार के शोध में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन को निश्चित दिशा देता है जिससे अध्ययन का निश्चित परिणाम मिलता है। अतः शोधार्थी शोध अध्ययन के निश्चित उद्देश्य निर्धारित किया है।

1. स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों का अध्ययन उनके ग्रन्थों के आधार पर करना।
2. स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों की पृष्ठभूमि में उनके शिक्षा दर्शन की रूपरेखा को प्रस्तुत करना।
3. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के विश्लेषण स्वरूप का प्रस्तुतीकरण।

4. स्वामी विवेकानन्द के विचारानुसार शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण पद्धतियों एवं शिक्षक पाठ्यक्रम की वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में विवेचना करना।
5. स्वामी विवेकानन्द के दर्शनों में समानताओं एवं विषमताओं का अध्ययन करना।

शोध का परिसीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन में विवेकानन्द जी के शैक्षिक विचारों को शामिल किया गया है और उनके शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता को वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में देखने का सफल प्रयास किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक अनुसंधान के अन्तर्गत ऐतिहासिक तथा लिखित दस्तावेजों, प्रमाण विधि, वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचार

समकालीन भारत में अंग्रेजों द्वारा चलाई हुई शिक्षा प्रणाली के विरूद्ध विद्रोह करके राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की स्थापना का बीड़ा उठाने वाले दार्शनिकों में स्वामी विवेकानन्द जी का नाम प्रमुख है, उन्होंने भारत पर पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली लागू करने का विरोध किया और भारत की संस्कृति के अनुरूप शिक्षा प्रणाली अपनाने का समर्थन किया इसके लिये स्वामी विवेकानन्द ने वेदांत की पुर्नव्याख्या आधुनिक परिप्रेक्ष्य में की तथा निराश एवं कुण्ठा के दलदल में फसी हुई भारतीय जनता को जीवन का नवीन पथ दिखाया, इन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुये उसकी तुलना एक ऐसे व्यक्ति से की जिसने अपने गधे को घोड़ा बनाने की इच्छा से इतना पीटा की बेचारा मर ही गया। स्वामी विवेकानन्द जी कहते है कि इस तरह लड़के को ठोक–पीटकर शिक्षित बनाने की जो प्रणाली है उसका अन्त कर देना चाहिए। माता–पिता के अनुचित दबाव के कारण हमारे बालकों के लिए समुचित समाज की आवश्यकता है, सुधार के लिए जबरजस्ती करना इसका परिणाम सदैव उल्टा ही होता है, यदि तुम किसी को सिंह बनाओगे तो स्यार ही बनेगा। स्वामी विवेकानन्द जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की तुलना निम्न बिन्दुओं के आधार पर की जा सकती है ।

शिक्षा का अर्थ

स्वामी विवेकानन्द जी का मानना है कि शिक्षा की व्याख्या शक्ति के विकास के रूप में किया जा सकता है। जिससे यह स्पष्ट है कि हमें बालकों के लिये उतना ही करना है कि वे अपने हाथ–पैर कान और आंखों का उचित उपयोग के लिए अपनी बुद्धि का प्रयोग करना सीख ले। स्वामी विवेकानन्द जी का मानना है कि विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा में परिवर्तन करते रहना चाहिए, जिससे विद्यार्थी अपने अतीत के जीवनों में अपने प्रवृत्तियों को गढ़ सके, उनके साथ–साथ स्वामी विवेकानन्द जी का यह भी मानना है कि सभी प्रकार की शिक्षा और इच्छा–शक्ति का प्रभाव और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बन सके, उसी का नाम शिक्षा है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि आज हमारे देश को जिस चीज की आवश्यकता है वह है लोहे की मांशपेशियों और फौलाद के स्नायु व दर्शनीय प्रचण्ड इच्छा–शक्ति जो सृष्टि के गुप्त तथ्यों और रहस्यों को भेद सके और इस उपाय से भी अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में समर्थ हो।

शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा का उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा सम्बन्धी परिभाषाओं में निहित रहता है, उनका मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में अर्न्तनिहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है यह पूर्णता मनुष्य में स्वतः विद्यमान रहती है और शिक्षा द्वारा इसका अनावरण आज किया जाता है।

पाठ्यक्रम

स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा के पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष रूप से कोई विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत नहीं की है, उन्होंने शारीरिक, आर्थिक एवं व्यक्तित्व के विकास के लिये लौकिक पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया है।

शिक्षण–विधि

स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षण पद्धति के सन्दर्भ में धर्म को आधार मानते हुये आध्यात्मिक पद्धतियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है, उनके अनुसार शिक्षा प्राप्ति की एकमय विधि है, (एकाग्रता) इसके अतिरिक्त योग विधि, व्याख्यान विधि, अनुकरण विधि, व्यावहारिक विधि तथा मातृभाषा का समर्थन किया है।

शिक्षक

स्वामी विवेकानन्द जी प्राचीन गुरू–गृह प्रणाली के प्रबल समर्थक थे, इनकी दृष्टि से शिक्षकों को भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान होना चाहिए, जिससे वे बच्चों को लौकिक एवं परालौकिक दोनों जीवन के लिये तैयार कर सके।

शिक्षार्थी

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी ब्रहम्चर्य का पालन करें।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द जी नये दर्शन के प्रतिपादक नहीं है, उन्होनें प्राचीन दर्शन को व्यावहारिक रूप दिया है, परन्तु इस व्यावहारिक रूप देने में अपनी मौलिकता है, इसलिए आज शैक्षिक विचारों को अलग दर्शन की संज्ञा दी जाती है।

शैक्षिक निहतार्थ

प्रत्येक शोध अध्ययन जैसे–जैसे पूर्णता की और अग्रसर होता है वैसे ही नवीन शोध हेतु समस्याओं की और इंगित करता है, प्रस्तुत शोध–प्रपत्र शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, विद्यार्थीगढ़ स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों को अपने जीवन में आत्मसात् कर अपने लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *नैर, वी0एस0 : ''स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार'' केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम 1980*
2. *पुथियथ, जे0डी0 : ''स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन'' बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई 1978*
3. *चौबे एस0पी0 :''भारत में आधुनिक शिक्षा–दर्शन'' लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ*
4. *लाल एवं पलोडः ''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'' 2006*
5. *शर्मा रामनाथ : भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1971*
6. *डॉ रामसकल पाण्डेय : शिक्षा के सिद्वान्त और आधार*